ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त आर्य जगत की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर शत्-शत् नमन

वर्ष 39, अंक 7 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 दिसम्बर, 2015 से रविवार 27 दिसम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न

आर्य समाज से अछूते क्षेत्रों में प्रचार के लिए कोष स्थापितः विशेष समिति का गठन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली में सभा प्रधान आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में रविवार 20 दिसम्बर 2015 को सम्पन्न हुई। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण सभा मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी उपस्थित नहीं हो सके जिसके कारण सभा के उपमंत्री जी ने बैठक का संचालन किया। उन्होंने गत अंतरंग सभा बैठक दिनांक 28 मार्च 2015 की कार्रवाई को पढ़कर सुनाया। जिसे सर्व सम्मति से पारित किया गया।

...शेष पेज 7 पर

लम्बी अस्वस्थता के उपरांत पहली बार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में पधारने पर महाशय धर्मपाल जी को आशीर्वाद प्रदान करते सभा प्रधान आचार्य बलदेव जी। साथ में हैं सर्व श्री राकेश चौहान, विद्यामित्र ठकुराल, देवेन्द्र पाल वर्मा, दीनदयाल गुप्त, गंगा प्रसाद, साध्वी उत्तमायति, मा. रामपाल, भारत भूषण त्रिपाठी सुरेशचन्द्र आर्य, सोमदत्त महाजन, आचार्य विजय पाल, राव हरिशचन्द्र आर्य, दीनानाथ वर्मा एवं श्री वाचोनिधि आर्य।

अन्तरंग सभा बैठक में पारित प्रस्ताव एवं लिए गए निर्णय

✦ आर्य समाज से अछूते प्रान्तों में कार्य करने के लिए विस्तार कमेटी का गठन

✦ भारत के जिन प्रदेशों में आर्य समाज नहीं है - तमिलनाडु, गोवा, अण्डमान निकोबार व अरुणाचल में आर्यसमाज के संगठन को खड़ा करने हेतु विशेष कोष का गठन। इन क्षेत्रों में प्रचारक भेजने एवं आर्य संगठन खड़ा करने के लिए यह कोष उपयोग किया जाएगा। इस विस्तार समिति के अध्यक्ष पद का दायित्व महाशय धर्मपाल जी को देने का प्रस्ताव आर्य सुरेश चन्द्र जी ने किया जिसे सदन ने सहर्ष स्वीकार किया। इन प्रदेशों में कार्य करने हेतु कोष में सर्व श्री दीन दयाल आर्य जी ने 11 लाख, आर्य सुरेश चन्द्र अग्रवाल 11 लाख, राव हरिश्चन्द्रआर्य 1 लाख तथा श्री धर्मपाल आर्य (आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट) ने 11 लाख रुपये की सहयोग राशि देने का आश्वासन दिया। अन्य महानुभावों से भी इस को हेतु सहयोग प्रदान करने की अपील की गई।

✦ वर्ष 2016 में सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रान्तीय सभाओं के काम-काज में मजबूती एवं सहयोग प्रदान करने हेतु विशेष बैठकों एवं गोष्ठियों का आयोजन होगा।

✦ महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद रिसर्च फाउंडेशन के उद्घाटन के अवसर पर अप्रैल 2016 में किया जाएगा विशाल दक्षिण भारतीय आर्य महासम्मेलन

✦ प्रत्येक प्रान्त में आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन और साहित्य प्रचार के लिए पुस्तक मेलों सहभागिता के लिए और अधिक बल दिया जाएगा।

✦ उज्जैन महाकुम्भ के अवसर पर प्रान्तीय सभाओं की ओर से किया जाए विराट वैदिक संस्कृति एवं साहित्य प्रचार

✦ दक्षिण प्रशान्त क्षेत्र में सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन ऑस्ट्रेलिया के सफल आयोजन के लिए कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों का आभार व्यक्त किया गया।

नाबालिक अपराधी को सजा की बहस

घृणित अपराधी को कैसा सम्मान?

एक प्रसिद्ध विद्वान का कथन है कि-कोई भी राष्ट्र सुव्यवस्था के साथ जन्म लेता है, स्वतंत्रता के साथ पलता बढ़ता है और अव्यवस्था के साथ उसका पतन हो जाता है! ठीक यही हाल आज हमारे देश का होता दिख रहा है! 16 दिसम्बर 2012 को देश की राजधानी दिल्ली में एक पैरामेडिकल छात्रा को छह दोषियों की हवस और दरिंदगी का शिकार होना पड़ा था। इन दोषियों ने छात्रा के साथ इंसानियत को तार-तार करते हुए दरिंदगी की सारी हदें पार कर दी थीं। उन्होंने इस घटना को एक चलती बस में अंजाम दिया था। मेडिकल जाँच में पता चला था कि इन वहशी दरिंदों ने छात्रा को ऐसी-ऐसी यातनाएं पहुंचाई थीं जिसे

सुनकर किसी की भी रूह कांप उठेगी। युवती की दर्दनाक चीखें सड़कों को भी चीरे दे रही थीं लेकिन इन दोषियों की रूह हिली तक नहीं और ये दरिंदें घायल अवस्था में छात्रा को सड़क पर फेंककर फरार हो गये थे?

इस घटना के बाद देश ही नहीं विदेशों तक दोषियों को कठोरतम सजा दिलाने की

...शेष पेज 7 पर

मदर टेरेसा को संत की उपाधि दिए जाने के सम्बन्ध में

संत की उपाधि के मायने क्या हैं?

मदर टेरेसा को अगले साल रोमन कैथोलिक चर्च की संत की उपाधि से नवाजा जायेगा। वेटिकन और मिशनरीज ऑफ चेरिटी ने पोप फ्रांसिस द्वारा मदर टेरेसा के दूसरे चमत्कार को मान्यता देने के लिए शुक्रवार को इसकी घोषणा की। 21वीं सदी में भी अंधविश्वास में डूबे ईसाई समुदाय के अनुसार पहला चमत्कार कई साल पहले कोलकाता में और दूसरा चमत्कार ब्राजील में एक रोगी के ठीक होने से जुड़ा है। पिछले कुछ वर्षो में अंधविश्वास पर बारीकी से अध्ययन करने के बाद एक बात सामने आई है कि कोई भी मजहब या सम्प्रदाय हो इस प्रकार की हरकतें होती रही हैं और आगे भी होती रहेंगी जब तक कि आम जनता

अपने कर्मो पर विश्वास करने की बजाय बाबाओं, संतो, माताओं, देवियों आदि के चक्कर में पड़ी रहेंगी। हो सकता है मदर टेरेसा की सेवा अच्छी रही होगी परन्तु इसमें एक उद्देश्य हुआ करता था कि जिसकी सेवा की जा रही है उसका ईसाई धर्म में धर्मांतरण किया जाये'' सवाल

...शेष पेज 6 पर

स्वाध्याय

थोड़ी-सी उपासना भी महान् फलदायक

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिद्धयस्य वर्धनम्।।
-साम. पू. 3/1/4/2
ऋषिः-मारीचः कश्यपः।। देवता-विश्वेदेवाः।। छन्दः-गायत्री।।

विनय-प्रभु की थोड़ी-सी भी भक्ति महान् फल देने वाली होती है। हम लोग समझा करते हैं कि थोड़े-से संध्या-भजन से, एक-आध मन्त्र द्वारा उसका स्मरण कर लेने से हमारा क्या लाभ होगा, या एक दिन यह भजन छोड़ देने से हमारी क्या हानि होगी, परन्तु यह सत्य नहीं होगा? हमारी उपासना चाहे कितनी स्वल्प और तुच्छ हो, परन्तु वह उपास्यदेव तो महान् है। ज्ञान और शक्ति में वह हमसे इतना महान् है कि हम कभी भी उसके योग्य उसकी पूरी भक्ति नहीं कर सकते और उसके सामने हम इतने तुच्छ हैं कि वह यदि चाहे तो अपने थोड़े-से दान से हमें क्षण में भरपूर कर सकता है। हम यदि थोड़ी देर के लिए भी उससे अपना सम्बन्ध जोड़ते हैं तो वह महान् देव उस थोड़े से समय में ही हमें भर देता है। सन्त लोग अनुभव करते हैं कि प्रभु का क्षण-भर ध्यान करते ही प्रभु की आशीर्वाद-धारा उनके लिए खुल जाती है और वे उस क्षण भर में ही प्रभु के आशीर्वाद से नहा जाते हैं, एक बार प्रभु का नामोच्चारण करते ही उन्हें ऐसा आवेश आता है कि शरीर रोमांचित हो जाते हैं और आत्मा आनन्दरस से पवित्र और प्रफुल्ल हो जाते हैं, परन्तु यदि हम साधारण लोगों की प्रार्थना-उपासना अभी उस महाप्रभु से इतना ऐश्वर्य नहीं पा सकती हैं, तब तो हमें उसके थोड़े से भी भजन का नियमित सेवन करना चाहिए, एक भी दिन, एक भी समय नागा न करना चाहिए। एक समय भी नागा होने से जो सम्बन्ध विच्छिन्न हो जाता है, वह फिर जोड़ना पड़ता है। यही कारण है कि नागा होने पर प्रायश्चित का विधान है। एवं एक समय नागा होने से एक समय की देरी ही नहीं होती, अपितु दुबारा सम्बन्ध जोड़ने जितनी देरी हो जाती है, अतः हम चाहे किसी दिन भजन में बिल्कुल दिल न लगा सकें, तथापि उस दिन भी कुछ-न-कुछ उपासना अवश्य करनी चाहिए, यत्न अवश्य करना चाहिए। पीछे पता लगता है कि एक दिन का भी यत्न व्यर्थ नहीं गया, एक-एक दिन की उपासना ने हमें बढ़ाया है-हमारे शरीर, मन और आत्मा को उन्नत किया है।

कम-से-कम यह तो असन्दिग्ध है कि संसार की अन्य बातों में हम जितना समय देते हैं, सांसारिक बातों की जितनी स्तुति-उपासना करते हैं और उससे जितना फल हमें मिलता है, उससे अनन्त गुणा फल हमें प्रभु की (अपेक्षया बहुत ही थोड़ी-सी) स्तुति उपासना से मिल सकता है और मिल जाता है। कारण स्पष्ट है, क्योंकि वह महान् है, ज्ञान का भंडार है, सर्वशक्तिमान् है और ये सांसारिक बातें अल्प हैं, तुच्छ हैं, निस्सार हैं, केवल ज्ञानशक्तिविहीन विकार हैं।

शब्दार्थ- महे-महान् प्रचेतसे-बड़े ज्ञानी देवाय-इष्टदेव परमेश्वर के लिए कत् उ-कुछ भी, थोड़ा-सा भी वचः शस्यते-वचन-स्तुतिरूप में कहा जाए तत् इत् हि-वह ही निश्चय से अस्य-इस वक्ता का वर्धनम्-बढ़ाने वाला है।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

स्वामी श्रद्धानन्द जी के सर्वस्व अर्पण पर विशेष

क्या लेकर आये थे क्या लेकर जाओगे?

हम सब लम्बे समय से सुनते आये है कि क्या लेकर आये थे क्या लेकर जाएंगे किन्तु बहुत कम लोग देखे-सुने जिन्होंने इस वाक्य को जीवन में उतारा और जिन लोगों ने इस वाक्य को जीवन का आधार वाक्य बना लिया वो ही इस दुनिया में अमर हो गये क्योंकि अंततः यह सिद्ध है कि क्या लेकर आये थे क्या लेकर जाओगे?

23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का 89 वां बलिदान दिवस हमें बार-बार यही प्रेरणा दे रहा है कि दानी तो न जाने कितने हुए किन्तु जमाना उनके सामने झुका जो यहाँ अपना सब कुछ अर्पण कर गये। एक ऐसी ही हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी थे सन् 1856 को पंजाब के जालंधर जिले के तलवन गाँव में जन्मे मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के निराशापूर्ण जीवन में आशा की क्षीण प्रकार रेखा उस समय उदय हुई, जब बरेली में उन्हें स्वामी दयानन्द का सत्संग मिला। स्वामी जी के गरिमामय चरित्र ने उन्हें प्रभावित किया। उस समय जहाँ भारतवर्ष के अधिकतर नवयुवक सिवा खाने-पीने, भोगने और उसके लिए धनसंचय करने के अलावा अपना कुछ और कर्तव्य न समझते थे। गुलामी में जन्म लेते थे और उस दासता की अवस्था को अपना भाग्य समझकर गंदगी के कीड़ों की तरह उसी में मस्त रहते थे उस समय आर्यावर्त्त की प्राचीन संस्कृति का सजीव चित्र खींचकर न केवल आर्यसंतान के अन्दर ही आत्मसम्मान का भाव उत्पन्न किया अपितु यूरोपियन विद्वानों को भी उनकी कल्पनाओं की असारता दिखाकर चक्कर में डाल दिया। जिस समय लोग राजनैतिक और धार्मिक दासता का शिकार थे। जिस समय लोग दुर्व्यसनों में लीन थे। उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लोगों को आत्मचिंतन और राष्ट्रचिन्तन करना सिखाया। महर्षि दयानन्द के अनुगामी जिन्होंने स्वयं का अध्यन कर अपने अन्तःकरण के परिवर्तनों को खोलकर जनता के सामने रख दिया। सेवा कार्य चाहे व्यक्तिगत हो अथवा सामाजिक हो, बहुत ही कठिन होता है उसको पार पाना; कई बार तो योगियों के लिए भी संभव नहीं हो पाता, फिर भी जो लोग समाज सेवा में संलग्न रहते हैं, सचमुच वे फौलाद का दिल रखते है। समाज के कल्याण के लिए मन समर्पित करने वालों की संख्या सर्वाधिक होती है उसके बाद वो लोग होते हैं जो धन समर्पित करते हैं बहुत विरले लोग होते हैं जो अपना तन,मन,धन, और तो और अपना परिवार तक समर्पित करते हैं अपनी पुत्री वेदकुमारी और अमृत कला को उस समय गुरुकुल में पढ़ने के लिए भेजा जब अधिकांश लोग स्त्री शिक्षा के खिलाफ थे। अपने पुत्रों को गुरुकुल में पढाने भेजा अपनी संपत्ति अपना परिवार, अपना जीवन और अपना सर्वस समाज के लिए दान करने वाले अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी को शत्-शत् नमन। वास्तव में स्वामी श्रद्धानन्द जी संस्कार लेकर आए थे और यश लेकर इस संसार से गए। हमें भी इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए कि जो संस्कार हमें प्राप्त हुए हैं, उनसे हमें यश भी प्राप्त हो। ***-सम्पादक***

ग्रन्थ परिचय

काशी-शास्त्रार्थ

प्रश्न 1: यह शास्त्रार्थ कब और कहां हुआ था?

उत्तर: जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है यह शास्त्रार्थ काशी, जो कि पौराणिकों का गढ़ था, में संवत् 1926 मि. कार्तिक सुदी 12, मंगलवार के दिन हुआ था।

प्रश्न 2 : शास्त्रार्थ किन-किन के बीच हुआ था अथवा शास्त्रार्थ के दोनों पक्ष कौन-कौन से थे?

उत्तर: शास्त्रार्थ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी तथा काशी निवासी स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती तथा बालशास्त्री आदि पण्डितों के बीच हुआ था।

प्रश्न 3: शास्त्रार्थ का विषय क्या था?

उत्तर : शास्त्रार्थ का विषय मूर्तिपूजा था। इसमें स्वामी जी का पक्ष पाषण मूर्तिपूजन आदि का खण्डन करना तथा काशी के पंडितों द्वारा मूर्तिपूजा का मण्डन करना था। यह मण्डन वेद प्रमाण के आधार पर करना निश्चित हुआ था।

प्रश्न 4 : क्या काशी के पण्डित वेदों के आधार पर मूर्तिपूजा का मण्डन कर पाये थे?

उत्तर: नहीं, वे कोई भी ऐसा वैदिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर पाये जिससे मूर्ति की पूजा करना सत्य सिद्ध हो सके। यहां तक कि वे 'प्रतिमा' शब्द से अपने पक्ष को सिद्ध करना चाहते थे, वे भी नहीं कर पाये। अतः बाद में मूल विषय को छोड़कर वे विषयान्तर में आ गये और 'पुराण' शब्द के 'विशेषण' और 'विशेष्य' विषय पर संवाद प्रारम्भ हो गया।

प्रश्न 5: इस विषय पर कौन-सा पक्ष विजयी हुआ?

उत्तर: इसमें भी काशीस्थ पण्डित 'पुराण' शब्द को 'विशेष्यावाची' (जो उनका पक्ष था) सिद्ध नहीं कर पाये, लेकिन स्वामी दयानन्द जी ने विशेषणवाची सिद्ध कर दिया। बाद में, अपनी पराजय होती देख काशीस्थ पण्डितों ने दो पेज स्वामी जी के समक्ष पटक कर, वहां लिखित 'पुराण' शब्द को विशेषण सिद्ध करने के लिए कहा। स्वामी जी अभी उनको पढ़ ही रहे थे कि वे बीच में उठकर ही शोर मचाने लगे और शास्त्रार्थ समाप्त हो गया।

प्रश्न 6: पूरे शास्त्रार्थ में विजयी कौन घोषित किया गया?

उत्तर: वास्तव में, काशी के लोग असभ्य व्यवहार करके, अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए दयानन्द जी को पराजित घोषित करके तालियां आदि भी पीटने लगे। यह एकदम सभ्यता विरुद्ध व्यवहार था। बाद में काशीराज के छापेखाने से छपकर भी उन्हें बदनाम करने की कोशिश की गई।

प्रश्न 7: हो सकता है कि इस शास्त्रार्थ में स्वामी जी की ही पराजय हुई हो?

उत्तर: इसी बात का निर्णय करने के लिए ही तो इस सम्पूर्ण शास्त्रार्थ को छापकर प्रकाशित किया गया, जिससे इसे पढ़कर सामान्य जनता भी निर्णय कर सके। इसके अतिरिक्त, इस शास्त्रार्थ के समय (संवत् 1926) से लेकर 1937 तक स्वामी जी, काशी में आकर बार-बार (छः बार) विज्ञापन लगाते रहे कि इतना होने पर भी कोई वैदिक प्रमाण एवं युक्ति के आधार पर मूर्तिपूजा को सत्य सिद्ध करना चाहे तो सभ्यता पूर्वक विचार किया जा सकता है, परंतु कोई सामने न आया। स्वामी जी उपर्युक्त घटना के बाद भी पहले की भांति ही वेदोक्त उपदेश करते रहे। यदि काशी के पण्डित विजयी हुए थे तो उन्हें शास्त्रार्थ अथवा विचार करने के लिए सामने आना चाहिए था, परंतु कोई सामने नहीं आया। इससे सिद्ध होता है कि विजय स्वामी दयानन्द जी की हुई थी। वस्तुतः सत्य की ही जीत होती है, झूठ की नहीं।

प्रश्न 8: यह शास्त्रार्थ कहां से और कब प्रकाशित किया गया?

उत्तर: वैदिक यन्त्रालय से संवत् 1937 में यह शास्त्रार्थ प्रकाशित किया गया था।

प्रश्न 9. यह पुस्तक किस भाषा में है?

उत्तर: यह संस्कृत और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में लिखी गई है।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

-मो. 09540040339

आर्य समाज के तेजस्वी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्य समाज के तेजस्वी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे जहाँ धार्मिक नेता, धर्मप्रचारक, समाज सुधारक, शिक्षाशास्त्री तथा राजनीतिज्ञ थे वहीं वे कलम के धनी, उत्कृष्ट लेखक तथा साहित्यसर्जक भी थे। उन्होंने हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू तथा अंग्रेजी में महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की । यदि उनकी आत्मकथा कल्याण मार्ग के पथिक की चर्चा करें तो कहना होगा कि यह हिन्दी की एकलब्ध प्रतिष्ठित कृति है। जिसमें लेखक ने अपने जीवन के सभी शुक्ल एवं कृष्ण पक्षों को पूरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत किया है। इसे 1981 वि. में प्रसिद्ध संस्था ज्ञानमण्डल काशी ने प्रकाशित किया था। स्वामी जी ने पं. लेखराम का प्रथम प्रामाणिक जीवन चरित 1914 ई. में लिखा। उनका संस्मरण प्रधान ग्रन्थ बंदीघर के अनुभव है जिसमें उन्होंने सिखों के अधिकार रक्षण के लिए स्वयं के गुरु का बाग सत्याग्रह में भाग लेने के अनुभव लिखे हैं। स्वामी दयानन्द का लघु जीवन चरित उनके द्वारा लिखा गया जिसे 1925 में प्रकाशित दयानन्द ग्रन्थमाला के प्रथम खण्ड में संकलित किया गया।

स्वामी श्रद्धानन्द की गणना साधारण कोटि के लेखकों में करना भूल होगी। उनमें गहन शोध, अध्ययन तथा अनुसंधान की प्रवृत्ति थी जो उनके द्वारा रचित अनेक ग्रन्थों में लक्षित होती है। वे ही प्रथम थे जिन्होंने स्वामी दयानन्द के पत्र व्यवहार को एकत्रित करने तथा स्वामी जी का धार्मिक अध्ययन गम्भीर तथा व्यापक था। यद्यपि उन्होंने विधिवत, संस्कृत का अध्ययन नहीं किया था तथापि स्वाध्याय के बल पर उन्होंने वेद, उपनिषद्, भगवद्गीता, मन्वादि स्मृति-ग्रन्थ एवं पुराणों का विशद अनुशीलन किया था। सद्धर्मप्रचारक पत्र में उन्होंने नियमित रूप से धर्मोपदेश शीर्षक से शास्त्रों की व्याख्याएँ लिखीं। उन्हें कालान्तर में लाला लब्भ्राम नैपड़ ने सम्पादित कर तीन खण्डों में प्रकाशित किया। वेदानुकूल संक्षिप्त मनुस्मति उनके गहन अध्ययन तथा विश्लेषण का सूचक है।

... हिन्दू मुस्लिम इत्तहाद की कहानी तथा अंधा एतकाद और खुफिया जिहाद उनके आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं। कुलियात के संन्यासी (1927) उनके उर्दू ग्रन्थों का संग्रह है। दुखी दिल की पुरदर्द दास्तां (1906) में प्रकाशित वह ग्रन्थ है जिसमें उन्होंने आर्य समाज में व्याप्त आन्तरिक असन्तोष तथा परस्पर के वैर विरोध की शोचनीय स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की है। ...

हिन्दी ग्रन्थों के अतिरिक्त उनकी उर्दू कृतियों की पर्याप्त संख्या है। उन्होंने सद्धर्मप्रचारक पत्र पर चलाये गये मुकद्दमे का विस्तृत वर्णन अपने ग्रन्थ में किया है जो कालान्तर में हिन्दी में अनुदित हुआ। हिन्दू मुस्लिम इत्तहाद की कहानी तथा अंधा एतकाद और खुफिया जिहाद उनके आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं। कुलियात के संन्यासी (1927) उनके उर्दू ग्रन्थों का संग्रह है। दुखी दिल की पुरदर्द दास्तां (1906) में प्रकाशित वह ग्रन्थ है जिसमें उन्होंने आर्य समाज में व्याप्त आन्तरिक असन्तोष तथा परस्पर के वैर विरोध की शोचनीय स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की है। सुबहे उमीद में वेदों के विभिन्न भाष्यकारों और स्वामी दयानन्द की भाष्य शैली का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ है। वे उर्दू के सफल लेखक होने के साथ-साथ राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। उनकी हिन्दी सेवा को देखते हुए साहित्य सम्मेलन ने अपने भागलपुर अधिवेशन में उन्हें सभापति मनोनीत किया। उनका अध्यक्षीय भाषण मातृभाषा का उद्धार शीर्षक से 1913 में प्रकाशित हुआ। तब वे वानप्रस्थी ही थे तथा महात्मा मुन्शीराम नाम से जाने जाते थे। ऋषि दयानन्द के नाम आये पत्रों का उचित वर्गीकरण कर उन्होंने 1910 में प्रकाशित किया। कालान्तर में पत्र-व्यवहार के संरक्षण-सम्पादन का कार्य पं. भगवदत्त तथा पं. युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा पूरा किया गया। स्वामी श्रद्धानन्द ही थे जिन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम 1875 में प्रकाशित संस्करण की विशेषताओं को अपने ग्रन्थ आदिम सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज के सिद्धान्त में निबद्ध किया तथा इस दुर्लभ ग्रन्थ की विशेषताओं को प्रकाशित किया। उन्होंने पं. लेखराम द्वारा लिखे गये ऋषि के अपूर्ण जीवन चरित को आत्माराम अमृतसरी द्वारा पूरा करवाया तथा उसकी भूमिका में इस जीवनी के महत्त्व का निरूपण किया। स्वामी दयानन्द के पूना में प्रदत्त प्रवचनों के उर्दू अनुवादक का श्रेय भी उन्हें जाता है तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के तृतीयांश का उर्दू अनुवाद भी उनकी लेखनी से हुआ।

1916-17 की अवधि में उन्होंने आर्य धर्म ग्रन्थमाला शीर्षक स्वल्पाकार के अनेक ग्रन्थ लिखे तथा प्रकाशित किये। इनमें उनकी सूक्ष्म अन्वेषण तथा विश्लेषण की वृत्ति दिखाई देती है। जब पादरी जे. एन. फर्कुहर ने अपने चर्चित ग्रन्थ Modern Religious Movements in India में आर्य सिद्धान्तों पर आक्षेप किये तो उनका उत्तर आपने ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज (1973 वि.) लिखकर दिया। पारसी मत और वैदिक धर्म (1916) तुलनात्मक धर्म के अध्ययन में उनकी रुचि का सूचक है। मानवधर्म शास्त्र और शासन पद्धति (1917) में मनुस्मृति का विशद अध्ययन है। ये सब ग्रन्थ उन्होंने मुन्शीराम जिज्ञासु के नाम से लिखे थे।

यद्यपि उनकी विविवत् शिक्षा बनारस में इण्टरमीडियेट तक हुई थी तथापि उनका अंग्रेजी लेखन गम्भीर तथा प्रभावी था। पटियाला राज्य द्वारा 1908 में जब आर्य समाजियों पर राजद्रोह का लांछन लगाकर मुकदमा चलाया गया और उन्हें जेल में डाल दिया तो आर्य समाज को दोषमुक्त कराने के लिए उन्होंने वर्षों पहले छोड़े वकालत के चोगे को पुनः पहना तथा बैरिस्टर रोशनलाल तथा दीवान बद्रीदास जैसे विश्रुत वकीलों के साथ आर्य समाज के पक्ष में मुकदमा लड़ा। कालान्तर में 1910 में आचार्य रामदेव के सहलेखन में इस अभियोग का विशद वर्णन अपने ग्रन्थ Arya Samaj and its Detractors: A Vindication शीर्षक से लिखा। जब मैंने 1987 में सम्पूर्ण श्रद्धानन्द ग्रन्थावली का सम्पादन करते हुए इस ग्रन्थ का अनुवाद किया तो मेरे पसीने छूट गये। मुझे हैरानी इस बात पर हुई कि मात्र इण्टर तक पढ़ा मुन्शीराम कैसी ऊंची अंग्रेजी लिखता है। अपने राजनैतिक जीवन को अभिव्यक्ति देने के लिए उन्होंने The Librator नामक पत्र में पन्द्रह संस्करण लिखे जो In Side Congress शीर्षक से छपे थे। श्रद्धानन्द ग्रन्थावली में मैंने इसका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है।

आर्य समाज की पुरानी पीढ़ी के नेताओं तथा कार्यकर्त्ताओं की यह विशेषता थी कि सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रहते हुए भी वे साहित्य सेवा में अग्रणी रहे। लाला लाजपत राय स्वामी श्रद्धानन्द, इन्द्र विद्यावाचस्पति, गंगा प्रसाद उपाध्याय आदि का लेखन इस तथ्य का प्रमाण है।-**श्रीगंगानगर, (राज.)**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक

रविवार 3 जनवरी 2016 दोपहर 2.00 बजे : आर्य समाज हनुमान रोड

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारियों अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों से निवेदन है कि सभा की बैठक में अवश्य ही समय पर पहुंच कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें।

इस दिन सभा के पूर्व प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर स्मृति यज्ञ का आयोजन सायं 5 बजे किया जाएगा। यज्ञोपरान्त समस्त उपस्थित आर्य महानुभावों के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था की गई है।

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विद्यामित्र ठुकराल	विनय आर्य
(प्रधान)	(कोषाध्यक्ष)	(महामंत्री)

सर्वप्रिय, हंसमुख, कर्मशील, सरल, विनम्र.... राजीव जी

भयंकर भंवर के झंझावातो के थपेड़ों से बचकर कोई नौका किनारे पर आकर डूब जाए तो उसे नियति के अतिरिक्त क्या कहा जाए। कुछ ऐसा ही हुआ हम सबके प्रिय राजीव आर्य जी के साथ। लगभग एक वर्ष तक अपनी बीमारियों से बहादुरी पूर्वक झूझकर पुनः स्वस्थ हो चुके थे। परंतु..... हा। ईश्वरेच्छा। हम सबने इस भयानक समाचार को सुना, उनकी मृत देह को न केवल देखा अपितु अग्नि देव को समर्पित भी किया फिर भी क्या बात है कि इस घटना पर अभी तक विश्वास करने का बुद्धि सहमत नहीं है। वो मंद-मंद मुस्कान, आत्मीयता के शब्दों से भरी वह वाणी, सरल विनोदी स्वभाव मस्तिष्क से विदा होने को तैयार नहीं हैं। उनसे जो एक बार मिला उनका ही होकर रह गया। हर किसी को ऐसा लगता कि राजीव मेरे ही हैं। समझ से परे है कि किसकी हानि अधिक हुई परिवार की, मित्रों की, समाज की सब कह रहे हैं

अब क्या होगा?

पंजाबी बाग शमशान में जब हजारों लोग अपने प्रिय नेता के अंतिम दर्शन की भारी मन से प्रतीक्षा कर रहे थे कि राजीव आर्य अमर रहे की ध्वनि सुनाई दी और शव यात्रा आ पहुंची, सौम्यता भरा, प्रशांत चेहरा मानो राजीव जी हम सबके साथ बात करने के लिए आतुर हों और हमें अंतिम संदेश दे रहे हों कर चले हम फिदा जाने तक साथियों, अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों। कोई भी ऐसा न बचा जिसकी आंखे नम न हुई हों। परिवार के लोगों का बिलखना स्वाभाविक है अनेकों स्थानों पर देखते हैं लेकिन परिवार से स्तर भी सभी लोगों का फूट-फूट कर रोना ऐसा पहली बार देखने को मिला, वास्तव में राजीव जी ने अपने आप को आर्य समाज के बहुत विशाल परिवार का न केवल सदस्य बनाया अपितु दिन रात सेवा करके इस मां की सेवा की। लगभग 2 वर्ष पूर्व जब वह गुड़गांव अस्पताल में थे। उस समय मेरी माता जी भी वहीं कुछ समय तक थी तब राजीव जी से दो बार मिलना हुआ, शरीर कृशकाय हो चुका था लेकिन चेहरे पर वही प्रसन्नता, ईश्वर पर दृढ़ विश्वास और ठीक होकर आर्य समाज की सेवा की इच्छा....धन्य हो राजीव। मेरी प्रथम भेंट 2006 अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन दिल्ली की यज्ञशाला व्यवस्था के समय हुई, यह भेंट कब मित्रता में परिवर्तित हो गई पता न चला, अधिकांश आर्य समाजी लोग लगभग इतने ही समय से राजीव जी के विशेष सम्पर्क में आए। 8 से 10 वर्षो के अल्प समय में ही राजीव आर्य समाज के क्षितिज में एक चमकता हुआ सितारा बनकर उभरे। ऐसा कैसे हुआ राजीव न तो कोई साधु, संयासी, ब्रह्मचारी, आचार्य, योगी, बहुब बड़े विद्वान, लेखक और वक्ता ही थे फिर भी सबके प्रिय इसलिए थे कि वह सरलता से सबको प्रिय बना लेते थे अपनी सेवा भावना, सबको साथ लेकर चलने की कला और कुशल संयोजक थे। बड़े से बड़े और छोटे से छोटे व्यक्ति के साथ घुल मिल जाना कोई उनसे सीखे। जब भी कोई इनको मुख्यातिथि आदि बनाकर आमंत्रित करता तो कहते कि मैं तो सेवक हूं कार्यकर्त्ता हूं वैसे ही आ जाऊंगा किसी अन्य व्यक्ति को जोड़ने के लिए उसे यह सम्मान दे दो।

आइये अपने इस मित्र की विदाई के समय संकल्प लें कि अपने व्यक्तिगत स्वार्थो, हठों व पूवाग्रहों को तिलांजलि देकर एक विनम्र पुत्र की भांति आर्य समाज रूपी अपनी मां की नेता बनकर नहीं सेवक बनकर सेवा करेंगे। इस प्रकार राजीव जी सदैव हमारे बीच जीवन्त रहेंगे। कहा भी गया है कीर्तियस्य स जीवति।

-हर्षप्रिय आर्य, गुड़गांव

स्व. श्री राजीव आर्य जी के निधन पर विभिन्न महानुभावों एवं संस्थाओं के शोक सन्देश प्राप्त हुए

श्री मनोहर लाल, मुख्य मंत्री हरियाणा; श्री सतीश चड्ढा मंत्री, आर्यसमाज कीर्तिनगर एवं मंत्री, महर्षि दयानन्द जन कल्याण ट्रस्ट; श्री सुरेन्द्र आर्य चेयरमैन जेबीएम ग्रुप; श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य प्रधान गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा; मंत्री आर्य समाज सुशान्त लोक, डी. ब्लॉक गुड़गांव; प्रबन्धक श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, रघुवीर नगर, न. दि.; श्री जितेन्द्र बनाती, व्यवस्थापक एवं श्रीमती सुनीता गौड़ प्रधानाचार्या श्री सनातनधर्म सरस्वती बाल मन्दिर सी.से. स्कूल, वैस्ट पंजाबी बाग; श्री रामनाथ सहगल, उपप्रधान डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा, मंत्री आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, उपप्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, उपप्रधान आर्य समाज (अनारकली), प्रधान भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा; श्री महेन्द्र सिंह लोचव आर्य समाज औचन्दी; श्री अजय सहगल प्रधान आर्य समाज कस्तूरबा नगर; भारत भूषण आर्य प्रधान आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय, गुड़गांव, मंत्री आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी; श्री चन्द्रशेखर शास्त्री,सम्पादक अध्यायत्म पथ; श्री विकास वर्मा प्रधान, आर्य समाज मंदिर वाई.ब्लॉक सरोजनी नगर; श्रीमती सविता महाजन, प्रधानाचार्या, रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनी नगर; श्री महेन्द्र सिंह, न्यूज़ 7 मीडिया ग्रुप; श्री मुकेश कुमार मंत्री, आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर; श्री धर्मपाल आर्य प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा; श्री महाशय धर्मपाल प्रबन्धक, एम.डी.एच. ग्रुप, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास (उदयपुर) श्री महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास(अजमेर) एवं महर्षि दयानन्द गोसंर्वधन केन्द्र (गाजीपुर), श्री सुरैन्द्र रैली प्रस्तौता, आर्य विद्या परिषद; श्री रणवीर सिंह आर्य प्रधान, नगर आर्य समाज शाहदरा; श्री भगवान दास प्रधान, आर्य समाज नांगलराया; श्री प्रकाश आर्य मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा; श्री एस. के. आर्य चेयरमैन, जे.बी.एम. ग्रुप मुम्बई; समस्त अधिकारी, आर्य वीरागनां दल; पं. सत्यपाल 'मधुर' अध्यक्ष, भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद्; श्री कन्हैयालाल आर्य पुस्तकाध्यक्ष एवं ट्रस्टी, परोपकारिणी सभा, अजमेर; श्री कन्हैयालाल आर्य उपप्रधान, आत्मशुद्धि आश्रम, झज्जर (हरियाणा), संरक्षक आर्य समाज शिवाजी नगर, गुड़गांव एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा; श्री जोगेन्द्र खट्टर महामंत्री, वेद प्रचार मण्डल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली; श्री शंकर दास बंसल सम्पादक, साप्ताहिक दिल्ली वैभव; डॉ. बी.डी. लाम्बा आर्य मंत्री, आर्य समाज नजफगढ़; श्री चतर सिंह नागर मंत्री, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल; प्रबन्ध समिति दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर; पश्चिमी वेद प्रचार मण्डल; आर्य समाज ए ब्लॉक जनकपुरी; श्री सतीश जिन्दल कोषाध्यक्ष, श्री दशहरा कमेटी पंजाबी बाग; सत्यभामा खन्ना महिला आर्य समाज हनुमान रोड; आर्य पब्लिक स्कूल राजाबाजार; सुखबीर सिंह आर्य उपप्रधान, आर्य समाज सागरपुर; श्री आजाद सिंह उपप्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्यवीर दल, एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग; श्री उषा किरण आर्य प्रधान, आर्य समाज विवेक विहार; श्री मनमोहन मेहता कार्यकारी प्रधान, आर्य समाज रोहतास नगर शाहदरा; श्री जवाहर भाटिया प्रधान, आर्य समाज दिलशाद गार्डन, आर्य गुरुकुल तिहाड़ ग्राम, आर्य समाज तिहाड़, श्री रवि चड्ढा मंत्री, आर्य समाज पूर्वी पजाबी बाग; श्री मनवीर सिंह राणा, मंत्री, आर्य समाज केशवपुरम्, श्री जोगेन्द्र खट्टर प्रधान, आर्य समाज मेन बाजार रानी बाग एवं महामंत्री अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ; श्री रमाशंकर शिरोमणी संयोजक, दयानन्द सेवाश्रम संघ नॉर्थ ईस्ट शाखा; आर्य समाज मंगोलपुरी; महाशय धर्मपाल आर्य विद्यानिकेतन झागुआ; आर्य गुरुकुल रानी बाग; शान्ति देवी आर्य कन्या गुरुकुल, सैनिक विहार; श्रीमती रचना आहूजा, प्रधाना, उत्तरी दिल्ली आर्य महिला वेद प्रचार मण्डल; श्री बाबूराम आर्य प्रधान, आर्य समाज बाजार सीताराम; श्री पार्था हल्दर सेन्टर हेड, पंजाबीगाग; श्री राजेश गुप्ता संपादक, मेरी दिल्ली; श्री राज कुमार आर्य प्रधान, आर्य समाज न्यू मुल्तान नगर; श्री सत्यानन्द आर्य, गुड़गांव; बीर राजेन्द्र कुमार कपूर विंग कमाण्डर (अवकाश प्राप्त) प्रधान, आर्य समाज सैनिक विहार; आर्य समाज सरस्वती विहा; श्री सुरेन्द्र कुमार धवन, संगठन मंत्री, सेवा भारती मातृछाया, श्री ईश नारंग मंत्री, आर्य समाज दयानन्द विहार; श्रीमती रचना आहूज महामंत्री, प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य; श्री संजय कुमार प्रबन्धक, रघुमल आर्य कन्या उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा प्रधान, आर्य समाज हनुमान रोड, श्री सोमदेव मल्होत्रा प्रधान, आर्य समाज गोविन्दपुरी; श्री संजीव आर्य प्रबन्धक, आर्य प्रकाशन एवं आर्य वैदिक पाठशाला (बाल); श्री रवि गुप्त प्रधान, अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा; श्री मदन लाल सैनी प्रबन्धक, आर्य वैदिक पाठशाला(कन्या); श्री चन्द्र मोहन आर्य मंत्री, आर्य समाज आर्य नगर; डॉ. बलराम राणा प्रधान, आर्ष गुरुकुल आर्य नगर; श्री अरुण प्रकाश वर्मा, मंत्री आर्य समाज मिण्टो रोड; आचार्य मुकेश आर्य उपप्रधान, वेद प्रचार निधि किराड़ी; श्री संजीव आर्य कार्यकारी प्रबन्धक, वेद विचार, किराड़ी; श्री सुधीर चन्द घई मंत्री, आर्य समाज बिड़ला लाइन्स; आर्य समाज आदर्श नगर; श्री हरबंस लाल कोहल कार्यकारी प्रधान, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा; श्री अमीर चन्द रखेजा, आर्य समाज मयूज विहार-1; श्री अनिल डिडवानिया मंत्री, सेवा भारती; आर्य समाज रोहिणी सैक्टर-7; सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल; श्री वेद प्रकाश प्रधान, आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी; श्री नरेन्द्र अरोड़ा मंत्री, आर्य समाज शालीमारबाग; श्री नरंजन देव सचदेवा मंत्री, आर्य समाज आशा पार्क; श्री जीवनलाल आर्य मंत्री, आर्य समाज अशोक विहार-1; आर्य समाज दयानंद विहार; श्री धर्मवीर आर्य मंत्री, आर्य समाज मोहन गार्डन; श्री भीमसेन कामराह, आर्य समाज शादीखामपुर; श्री राम भरोसे आर्य मंत्री, आर्य समाज जहांगीरपुरी; पतंजलि योग समिति; श्री अशोक गुलाटी उपप्रधान, आर्य समाज नोएडा; श्री वागीश ईसर प्रधान, आर्य समाज डोरीवालान; श्री सुरेश चन्द आर्य गुजरात; आचार्य एम. आर. राजेश, केरल; श्री सुरेश भरवाहजी; श्री यशपाल आर्य, दिल्ली; श्री योगेश मुन्जाल, हरियाणा; श्री आनन्द चौहान जी; श्री प्रकाश कथूरिया जी; डॉ. रमाशंकर शिरोमणि प्रतिनिधि, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ पूर्वोत्तर भारत; पूर्ण सिंह डबास आर्य समाज साकेत, आर्य समाज मॉडल टाऊन, आर्य समाज टैगोर गार्डन; आर्य समाज 'सी' ब्लॉक जनकपुरी।

स्व. राजीव आर्य को श्रद्धांजलि देने उमड़ा अपार जनसमूह

अश्रुवपुरित नेत्रों से दी शोक संतप्त परिवार को सांत्वना

आर्य जगत को समर्पित एक महान व्यक्तित्व श्री राजीव आर्य का 13 दिसम्बर 2015 को एक सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। श्रद्धांजलि सभा वेस्ट पंजाबी बाग स्थित एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल के प्रांगण में सम्पन्न हुई। श्रद्धांजलि सभा में अनेक गणमान्य महानुभावों ने पहुंचकर स्व. राजीव आर्य को श्रद्धांजलि अर्पित की।

रुंधे गले से माईक को संभाला दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य जी ने तथा दिवंगत राजीव आर्य के जीवन की उपलब्धियों से उपस्थित जनसमूह को अवगत कराया। दिवंगत राजीव आर्य जी के निकट सम्बन्धी लोगों में शिक्षक, समाजसेवी, व्यापारी, युवा, बुजुर्ग हर वर्ग के लोग थे। सभी लोगों ने उन्हें भरे गले से श्रद्धांजलि दी जिनमें उन सभी ने उनके साथ बिताए हुए पलों को साझा किया। इनमें मुख्य रूप से स्वामी सम्पूर्णानंद आचार्य अखिलेश्वर जी शामिल थे।

श्रद्धांजलि देने वालों में पूज्य आचार्य अखिलेश्वर महाराज, सत्यपाल पथिक (भजनोपदेशक), स्वामी सम्पूर्णानंद, कुलदीप आर्य (भजनोपदेशक बिजनौर), देव शर्मा (भजनोपदेशक), अंजलि कोहली (प्रधानाचार्य एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल), अरविंद नागपाल (मैनेजर एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, महाशय धर्मपाल (चेयरमैन एम.डी.एच.) योगेश मुन्जाल (हीरो परिवार) एवं स्व. राजीव आर्य के बेहद नजदीकी व प्रेरक मुकेश जी (प्रांतीय सेवा प्रमुख), श्रीमती प्रकाश कथूरिया (प्रधान प्रान्तीय आर्य महिला सभा), आचार्य डॉ. वागीश, मित्र दलजीत गिल, कुंवर सचदेव, अरुण देव भारद्वाज ने भी उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ. रमाकान्त गोस्वामी (पूर्व मंत्री दिल्ली सरकार), योगेश आर्य, एस. के आर्य, स्वामी धर्म मुनि जी, जीववर्धन शास्त्री (अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सभा), आनन्द चौहान (एमिटी परिवार) सभी ने समस्त आर्य परिवार को सांत्वना देते हुए कहा कि अब उन्हें श्री राजीव आर्य के सभी अधूरे आर्य समाज के तथा सामाजिक कार्यों को पूरा करने की ओर कदम बढ़ाने चाहिए, उनकी महान आत्मा को यही श्रद्धाजंलि होगी।

स्व. राजीव आर्य में सरलता नेतृत्व क्षमता तथा वह इतने मृदुभाषी थे कि सहज ही सभी को अपना बना लेने की अद्भुत क्षमता उनमें विद्यमान थी। आर्य समाज पंजाबी बाग के प्रधान रहे स्व. ईश्वर चन्द्र आर्य एवं माता कमलेश आर्य के पांच पुत्र है पांचवें और सबसे छोटे सुपुत्र राजीव आर्य का जन्म 30 नवम्बर 1962 को पंजाबी बाग में हुआ। उनके चार भाईयों में सबसे बड़े विजय आर्य, विनय आर्य, योगेश आर्य तथा राजेश आर्य हैं। उनका विवाह श्रीमती पूजा आर्य से हुआ तथा सुपुत्र श्री ऋषभ आर्य अभी युवा है। स्व. राजीव आर्यजी अपनी कुशाग्र बुद्धि एवं परिवार में सबसे छोटे होने के कारण सबके प्रिय थे। उन्होंने आर्य समाज पंजाबी बाग के विभिन्न पदों को सुशोभित किया।

दिवंगत राजीव आर्य के आकस्मिक निधन पर पूरे देश से शोक संदेश आए जिनमें प्रमुख हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर भी थे। उन्होंने अपने सन्देश में दिवंगत राजीव आर्य के निधन को आर्य समाज की बड़ी क्षति बताया। देश के विभिन्न राज्यों के आर्य समाज मुख्यालयों से भी बड़ी संख्या में शोक संदेश आए जिनमें असम, नागालैण्ड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखण्ड, राजस्थान, केरल, मध्य प्रदेश के साथ-साथ बहुत से अन्य प्रदेश शामिल हैं।

स्व. राजीव आर्य सबसे कनिष्ठ होने पर भी आर्य समाज के कई संस्थाओं व संगठनों को नेतृत्व प्रदान किया। आर्य समाज पंजाबी बाग (पश्चिम) के प्रधान, एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजीबी बाग के अध्यक्ष, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामंत्री, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के मंत्री, रघुमल आर्य कन्या सी.सै. स्कूल राजा बाजार के अध्यक्ष, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कोषाध्यक्ष एवं आर. एस.एस के सदस्य थे। आदिवासी क्षेत्रों से दिल्ली में आने वाले आदिवासी बच्चों को उन्होंने अपने एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल में नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध कराई। आज भी इस स्कूल में लगभग 100 छात्र नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ये लगभग 300 स्कूलों से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से जुड़े थे।

स्व. राजीव आर्य आर्य समाज के करीब 40 स्कूलों की बागडोर संभालने वाली आर्य विद्या परिषद के मुख्य आधारस्तम्भ रहे हैं। स्व. राजीव आर्य सिंगापुर और थाईलैण्ड में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले आर्य समाज के कार्यक्रमों में भी आर्य समाज का प्रतिनिधित्व करते रहे थे। एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल के चेयरमैन श्री सत्यानंद आर्य श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित न हो सके क्योंकि पारिवारिक जन की मृत्यु के कारण उन्हें अचानक उड़ीसा जाना पड़ा। उनकी अनुपस्थिति में मैनेजर अरविन्द नागपाल ने उनका शोक सन्देश पढ़कर सुनाया। स्व. राजीव आर्य का मुस्कुराता चेहरा सदैव आखों के सामने बना रहेगा और हम सभी को प्रेरणा देता रहेगा। ऐसे व्यक्तित्व के कार्यों एवं आर्य समाज की सेवाओं के प्रति आज हम सब नतमस्तक हैं। परमपिता परमात्मा उन्हें अपने श्री चरणों में विश्राम दे ऐसी प्रार्थना है।

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

Drinking leads to the path of ruin.

When addicted to drinking, man loses his power of discrimination. At the spur of a moment, he commits undesirable acts even before his children and family members. When asked, he often forgets to tell his own name and address. He abuses innocent persons walking on the road.

It is seen that animals quarrel among themselves with some purpose. But a drunkard fights with nonsense arguments with no reason or rhyme. He invites quarrel. His misfortune is that he does not feel any shame or fear while performing foolish actions. Gradually, his vital organs lack in strength.

The verse says, "The drunken lies naked like animals. His face becomes disfigured, speech disorderly and movement faulty. He cries aloud and disturbs the sleep of the family members at night. No one accepts him as his near one or friend. People taunt his wife and his children. His parets always express deep grief, anger and sorrow."

Bad company leads to several vices like drinking. Drinking is a sin. The lrunken is a sinner to himself as well as to his family and society. Man ' s Individual and social life are shattered when he takes to this vice. Vedic verses, therefore, emphasize on good company.

हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्।
ऊधर्न नग्ना जरन्ते।। (Rv.VIII.2.12)

Hrtsu pitaso yudhyante durmadaso na surayam.
udhar na nagna jarante..

The Internal Enemies

The internal enemies are more dangerous than the external ones. Six powerful adversaries of man are lust, anger, greed, attachment, pride and envy. They endanger the human life every moment. In metaphor, these evil traits have been symbolised as the degraded lives of birds and beasts.

The owl loves darkness and gets restless in light. Likewise, man when he becomes a victim of attachment, disregards truth and knowledge. Due to attachments, he becomes annoyes with the things not dear to him. This results in anger. The sheep has been described as a symbol of anger. The dog is the symbol of jealousy.

The desire of lust turns man blind and deaf. The swan is the symbol of lust. Man becomes proud of his wealth, youth, power and beauty. The bird 'Garuda' is the symbol of pride. Greed has been symbolised as vulture.

O Lord of resplendence may you cause affliction to the fiendish garb of all my charming vices of the owl, sheep, swan, dog, Garuda and vulture. Slay such a demoniac evil by the stroke of your stones.

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेवं प्र मृण रक्ष इन्द्र।।
Ulukayatum susulukayatum jahi svayatum uta kokayatum.
suparnayatum uta grdhrayatum drsadeva pra mrna raksa indra ..

The Three Bondages

"May You, O Venerable Lord, loosen the bonds that hold us, loosen the three bonds the upper, the lower and the middle one. Give us strength to obey your eternal laws to faithfully follow your command and thereby avoid sin".

The devout person, cherishing communion with the Lord, makes a fervent prayer, O Most Respondent, save me from the evils. Liberate me from the three fetters'. The uppermost knot is of ignorance and false beliefs. This fastens man to animalism and puts a firm brake to his faculty of discrimination. The middle knd is one' s painful feeling every moment caused by the apprehension of danger or evil. Fear makes a man coward and destroys his will power and vigour. Last but not the least, is the lower bondage which is sexual desire. Sex impulses make a person almost blind. They put an end to the power of discretion and discrimination.

O Lord, cutting asunder the three bonds, may we lead unobstructed life. May our senses possess restrainrt, morality and virtues. O Master, remove our unreasonable beliefs, undesirable fear and sensual craziness.

उदुत्तमं वरुण पामस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।। (Rv.I.24.15)

Ud uttamam varuna pasam asmad avadhamam vi madhyamam srathaya.
atha vayam aditya vrate tavanagaso aditaye syama ..

To Be Continued...

संस्कृतम् सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति। (धनोपार्जनम्)

सर्वे जनाः संसारे सुखमिच्छन्ति। सुखं च धनेनैव प्राप्तुं शक्यते। अतो धनोपार्जनस्य महत्यावश्यकता भवति। अद्यत्वे यत्र कुत्रचिदपि गच्छामस्तत्र सर्वत्रैव धनस्य माहात्म्यं पश्यामः। धनेन विना न विद्योपार्जनं कुर्त शक्यते, न जीविकानिर्वाहश्च भवति। सुखार्थं परोपकारार्थं त्यागार्थं दानार्थं भोगार्थं विवाहार्थं पुत्रादिसंरक्षणार्थं गार्हस्थ्यसंचालनार्थं भोजनार्थं भवननिर्माणार्थं सर्वत्रैव धनस्यावश्यकता भवति। यस्य समीपे धनं नास्ति, तस्य कश्चिदपि अभिलाषो न पूर्तिमेति। साधूक्तं केनापि कविना–

बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते, पिपासितैः काव्यरसो न पीयते। न छन्दसा केनचिदुद्धृतं कुलं, हिरण्यमेवार्जय निष्फला गुणाः।।1।।

वेदेऽपि धनोपार्जनस्य धनस्वामित्वस्य च आदेशः प्राप्यते वयं स्याम पतयो रयीणम्।।2।।

यस्य सीमपे धनं भवति स एव सुखेन शेते। स एव संसारे कुलीनो विद्वान् गुणज्ञो दानी वक्ता प्रभुः इति कथ्यते। अत एवोच्यते–

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः। स एव वक्ता स च दर्शनीयः, सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।।3।।

धनैर्निष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति, धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति। धनेभ्यः परो बान्धवो नास्ति लोके, धनान्यर्जयध्वं धनान्यर्जयध्वत्।।4।।

यस्य समीपे धनं भवति, तस्यैव मित्राण्यपि भवन्ति, न तु निर्धनस्य। यतो हि–

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि, यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः। यस्यार्थाः स पुमांल्लोके, यस्यार्थाः स च पण्डितः।।5।।

प्राचीनैः मुनिभिरपि धनस्योपयोगिता स्वीकृता आसीत्। अत एव तैः धर्मार्थकाममोक्षात्मके चतुर्वगे अर्थस्य धर्मानन्तरं स्थानं कृतमस्ति।

धनोपार्जनस्य बहूनि साधनानि सन्ति सदोषाणि च। चौर्येण, कपटेन, छलप्रपञ्चेन, मिथ्याभाषणेन, उत्कोचग्रहणेन, अन्यैश्चानुचितसाधनैर्धनं प्राप्तुं शक्यते, परंतु तद्धनं विनाशकरमेव भवति। अतः सर्वैः सर्वदा सदुपायैरेव धनोपार्जनं कर्तव्यम्। विद्याध्यापनेन, कृषिकर्मणा, व्यापारेण, सेवया, परिश्रमेण वा यद् धनमुपार्जितं भवति, तत् फलति। तेनैव मनुष्यस्य श्रीवृद्धिर्भवति। अतः सर्वैः सुदपायैरेव सदा धनोपार्जनं कर्तव्यतम्, सत्कर्मसु च तस्य व्ययः करणीयः।

रचनानुवादकौमुदी
(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

पृष्ठ 1 का शेष

संत की ...

सिर्फ धर्मातरण का नहीं है लेकिन अगर यह (धर्मातरण) सेवा के नाम पर किया जाता है तो सेवा का मूल्य खत्म हो जाता है। जहाँ सेवा का मूल्य चुकाना पड़ता हो वहां धर्म नहीं व्यापार होता है और ऐसा करने वाले को संत नहीं व्यापारी कहा जा सकता है? जिसका जिन्दा उदाहरण सुसान शील्ड्स के अनुसार जिसने मदर टेरेसा के साथ नौ साल तक काम किया; सुसान टेरेसा की चेरिटी में आये दान का हिसाब-किताब रखती थी। जो लाखो रुपया दीन-हीनों की सेवा में लगाया जाना था वह न्यूयार्क के बेंक खातों में पड़ा था। यदि कोई गरीब दर्द से कराहता तो मदर टेरेसा उसे दवाई देने की बजाय अंधविश्वास के घूंट पिलाती थी। वह रोगी से कहती जीसस को याद करो वह तुम्हारे चुम्बन ले रहा है आदि आदि।

मदर टेरेसा ऐसा क्यों चाहती थी इसका जवाब 1989 में मदर टेरेसा ने खुद टाइम मैगजीन को दिए एक इंटरव्यू में दिया था।

प्रश्न- भगवान् ने आपको सबसे बड़ा तोहफा क्या दिया है?

मदर टेरेसा- गरीब लोग।

प्रश्न -भारत में आपकी सबसे बड़ी उम्मीद क्या है ?

मदर टेरेसा - सब तक जीसस को पहुंचाना।

क्या यही वजह है कि गरीब लोग जल्दी भय, चमत्कार और धन की लालसा में अपनी मूल परम्पराओं व धर्म से विमुख हो जाते हैं उनकी जीवनी लिखने वाले नवीन चावला खुद स्वीकार करते हैं कि मदर टेरेसा ने खुद कहा था कि मैं कोई समाज सेविका नहीं हूँ मेरा काम जीसस की बातों को लोगों तक पहुँचाना है।

मदर टेरेसा की ईसाई धर्म में आस्था बेहद गहरी थी। जीसस के प्रति उनका समर्पण उन्हें कोलकाता खींच लाया था। कालीघाट इलाके से शुरू हुआ धर्म परिवर्तन ये खेल मदर टेरेसा के लिए बेशुमार शोहरत और धन लेकर आया; गरीब लोगों से उनका यह झूठा प्रेम अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार क्रिस्टोफर हिचेन्स ने मदर टेरेसा के सभी क्रियाकलापों पर विस्तार से रोशनी डालते हुए एक किताब हेल्स एंजेल्स (नर्क की परी) इसमें उन्होंने कहा है कि कैथोलिक समुदाय विश्व का सबसे ताकतवर समुदाय है, जिन्हें पोप नियंत्रित करते हैं। चैरिटी चलाना, धर्म परिवर्तन आदि इनका मुख्य काम है। टेरेसा की मौत के बाद पोप जॉन पॉल को उन्हें संत घोषित करने की बेहद जल्दबाजी दिखाई थी। हो सकता है इसका मुख्य कारण भारत में बड़े पैमाने पर धर्मातरण किया जाना रहा हो?

बहरहाल इस मामले पर प्रश्न इतना है कि यह ईसाई समुदाय का अपना व्यक्तिगत मामला न होकर धार्मिक व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न बन जाता कि क्या दो संयोग हो जाने पर किसी को संत घोषित किया जा सकता है? क्या मनुष्य ईश्वर की बनाई व्यवस्था को संचालित कर उसके वजूद को टक्कर दे सकता है? यदि मदर टेरेसा को याद करने से दो रोगी ठीक हो सकते हैं तो समूचे विश्व में अस्पतालों की जरूरत क्या है? हर जगह टेरेसा का फोटो लटका दो मरीज स्वतः ठीक हो जाया करेंगे या फिर भारत में और अंधविश्वास को बढ़ावा देने की योजना है? वैसे देखा जाये तो पिछले कुछ सालों में भारत के अन्दर भी कोई दो ढाई करोड़ लोग संत शब्द का इस्तेमाल करने लगे हैं पर सही मायने में यह संत शब्द का अपमान है; क्योंकि आजीवका या शोषण चाहें धार्मिक हो, आर्थिक हो, या मानसिक हो करने वाला संत नहीं हो सकता! हमारी वेटिकन सिटी से अपील है अब धर्म और अपनी मान्यताओं के नाम पर और अधिक अन्धविश्वास को 'ना' बढ़ायें।

-राजीव चौधरी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन : अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक -युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं। इसी श्रृंखला में आगामी 3 माह में जनवरी 2016 से मार्च 2016 के मध्य 13वें, 14वें, एवं 15वें परिचय सम्मेलनों की तिथियां निश्चित कर दी गई हैं।

आपसे निवेदन है कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर प्रोत्साहित करें। **फार्म www.thearyasamaj.org** से डाउन लोड किए जा सकते हैं। फार्म की फोटो प्रति भी मान्य है।

14वां परिचय सम्मेलन (म. प्रदेश)
दिनांक 14 फरवरी, 2016
आर्यसमाज रेलवे कालोनी, इन्द्रा नगर, रतलाम (म.प्र.)
अन्तिम तिथि 30 जनवरी, 2016
संयोजक : डॉ. दक्षदेव गौड़-09425907070
सम्पर्क : श्री भगवान दास अग्रवाल मो. 08989467396

15वां परिचय सम्मेलन (ज.-कश्मीर)
दिनांक 27 मार्च, 2016
आर्यसमाज बक्शी नगर, जम्मू
अन्तिम तिथि 10 मार्च, 2016
संयोजक : श्री राकेश चौहान- 09419206881

विशेष जानकारी के लिए राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा, मो. 09414187428 से संपर्क करें।

पृष्ठ 1 का शेष **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि ...**

आर्य समाज के संगठन की सुदृढ़ता : बैठक में बताया गया कि गत अन्तरंग सभा बैठक में प्रस्ताव पारित किया गया था कि जिन जिलों में आर्य समाज की कोई भी इकाई/संस्था कार्यरत नहीं है। उनकी सूची तैयार करके प्रांतीय सभाएं सार्वदेशिक सभा को भेजें ताकि वहां आर्य समाज की कोई गतिविधि आरंभ करने की दिशा में कार्य किया जा सके। उन्होंने बताया कि अभी तक किसी भी राज्य की कोई भी सूची सभा को प्राप्त नहीं हुई है। अत: यथाशीघ्र सूची तैयार करके भिजवाने का कष्ट करें।

आर्य समाज के अछूते क्षेत्र : श्री विनय आर्य जी ने बताया कि भारत के अनेक ऐसे राज्य हैं। जहां आर्य समाज की कोई भी इकाई कार्य नहीं कर रही हैं किन्तु वहां कार्य करने की संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे क्षेत्रों में कार्य करने के लिए प्रचारकों की व्यवस्था आवश्यक है और इसके लिए विशेष कोर्स स्थापित करना आवश्यक है जिससे इन क्षेत्रों में प्रचार कार्य आसानी से किए जा सकें। उन्होंने बताया कि तमिलनाडू, गोवा, अंडमान निकोबार एवं अरूणाचल प्रदेश एवं लक्ष्यद्वीप ऐसे क्षेत्र हैं जहां अभी तक आर्य समाज नहीं पहुंच सका है। उन्होंने बताया कि लक्ष्यद्वीप में आर्य समाज की गतिविधि संचालित करना बहुत कठिन है। क्योंकि वहां 85 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम हैं और 150-200 के आसपास ही हिन्दू हैं। अत: वहां संभावनाएं नगण्य हैं। उन्होंने कहा कि शेष क्षेत्रों में सम्भावनाएं हैं तथा वहां कार्य किया जा सकता है।

इस हेतु कोष स्थापित करने के लिए श्री धर्मपाल आर्य जी ने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से 11 लाख रुपए, श्री दीनदयाल गुप्ता (कोलकाता) ने 11 लाख रुपए, उप प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी ने 11 लाख रुपए तथा राव हरिशचन्द्र आर्य ने 1 लाख रुपए देने की घोषणा की। इस समिति एवं कोष का अध्यक्ष बनने के लिए महाशय धर्मपाल जी से निवेदन किया गया जिसे उन्होंने सहज स्वीकार किया।

वैवाहिक परिचय सम्मेलन : बैठक में बताया गया कि गत बैठक में लिए गये निर्णय के अनुसार दिल्ली, गुजरात, जम्मू-कश्मीर में वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं। किन्तु अभी अन्य प्रदेशों से ऐसी कोई सूचना प्राप्त नहीं हो सकी। उन्होंने प्रांतीय अधिकारियों से इन्हें आयोजित करने का निवेदन किया। जिस पर उत्तर प्रदेश, हरियाणा, बिहार, झारखंड एवं छत्तीसगढ़ की आर्य प्रतिनिधि सभा ने इनके आयोजन यथा शीघ्र करने का आश्वासन दिया।

प्रांतीय सभाओं का निरीक्षण : प्रांतीय सभाओं का निरीक्षण करने के लिए बताया गया कि सभा प्रांतीय सभाओं के कार्य एवं गतिविधियों का निरीक्षण करना चाहती है। इस हेतु प्रस्ताव पारित किया गया था किन्तु अभी तक तिथियां निश्चित नहीं होने के कारण निरीक्षण नहीं किया जा सका है। श्री सुरेश चन्द अग्रवाल जी ने सभा के उप प्रधान एवं महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनि जी का संदेश पढ़कर सुनाया जिसमें उन्होंने आर्य समाज के संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए कुछ सुझाव लिखे थे। उन्होंने कहा कि सभा इन विचारों पर कार्य करेगी इन्हें पूर्ण करने का प्रयास करेगी। अन्त में श्री विनय आर्य जी ने बताया कि 26 अप्रैल 2014 को केरल में बन रहे महाशय धर्मपाल वेद रिसर्च फांउडेशन का उद्घाटन किया जाएगा। सभा प्रधान आचार्य बलदेव जी ने इसे सार्वदेशिक सभा की ओर से आयोजित करने की स्वीकृति प्रदान की।

महाशय धर्मपाल आर्य विद्या निकेतन बामनिया का उद्घाटन : उन्होंने बताया कि इस विद्यालय का उद्घाटन मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश का कार्यक्रम निश्चित होने के बाद 1 मार्च 2016 को किया जाएगा।

महाशय धर्मपाल एमडीएच विद्या निकेतन धनश्री आसाम: इस विद्यालय का शुभारंभ 1 जनवरी 2016 को किया जाएगा।

आर्य समाज गुरु हरिकिशन मार्ग, शकूर बस्ती का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर गुरु हरिकिशन मार्ग (रेलवे रोड), राजा पार्क चौक, शकूर बस्ती, दिल्ली-110034 के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में 11 दिसम्बर 2015 से 13 दिसम्बर 2015 तक ऋग्वेद शतकीय यज्ञ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ब्रह्मा आचार्य नरेन्द्र मैत्रैय जी थे।

आर्य समाज लेखू नगर, त्री नगर का 56वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज लेखूनगर, त्रीनगर अपना 56वां वार्षिकोत्सव दिनांक 28 दिसम्बर से 3 जनवरी 2016 तक सामवेद पारायण महायज्ञ के साथ मना रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य प्रभामित्रजी एवं मुख्य अतिथि श्री धर्मपाल आर्य प्रधान दि.आ. प्र. सभा, होंगे समारोह में आर्यवीर दल सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं भजनों का अयोजन किया गया है।

पृष्ठ 1 का शेष **घृणित अपराधी ...**

मांग ने जोर पकड़ा। देश के कई हिस्सों के साथ राजधानी में भी जनसमुदाय न्याय और कानून के लिए सड़कों पर उतर गया। पुलिस ने त्वरित कार्यवाही करते हुए कुछ ही दिनों में इन दरिंदो को गिरफ्तार कर लिया किन्तु इनमें से एक दोषी 17 साल 6 महीने का निकला। इस मामले में एक आरोपी ने आत्महत्या और चार को कोर्ट ने फांसी की सजा और इस नाबालिग को 3 साल की सजा सुनाई किन्तु जहाँ अब वह दोषी आने वाली मौत का इंतजार कर रहे हैं वहीं यह नाबालिग दोषी रिहा होने की तैयारी कर रहा है। किन्तु इस दरिन्दे की रिहाई पूरी न्यायिक व्यवस्था पर प्रश्न उठा रही है? क्या इतने क्रूर और निर्मम अपराधी को सिर्फ नाबालिग होने का हवाला देकर छोड़ना सही है? इस बात की कौन गारन्टी लेगा कि 3 साल बाल सुधार गृह में रहने के बाद वह सुधर गया और आगे सभ्य समाज के लिए खतरा नहीं बनेगा? क्या सरकार नारी मन और तन के इस खूंखार हत्यारे को जिसने उस छात्रा के साथ लोहे की रौड देकर यातना का सबसे घिनौना कृत्य किया था, को किस आधार पर रिहा कर रही है? इस मामले में जहाँ न्यायिक व्यवस्था समाज के घेरे में है वहीं दिल्ली सरकार इस मामले में भी धार्मिक राजनीति करने से बाज नहीं आई। चूंकि नाबालिग आरोपी मुस्लिम समुदाय से है तो दिल्ली सरकार ने आनन-फानन में आरोपी को रिहा होते पुरस्कृत करने के साथ इस दरिंदे के लिए 10 हजार रुपये और एक सिलाई मशीन की घोषणा तक कर दी क्या सिर्फ इसलिए कि वो समुदाय विशेष से है? राजनीति के अपने कारण होते हैं और न्यायालय के अपने, पर समाज का प्रश्न यह है कि क्या अब यह दरिंदें सरकारी संरक्षण में पलेंगे? आखिर उसे किस काम के लिए पुरुस्कार दिया जा रहा है? नारी शक्ति मात्रशक्ति को रौंदने के लिए, उसके अपमान के लिए? यदि ऐसा है तो फिर दिल्ली सरकार महिला सम्मान के नाम पर बड़े-बड़े स्लोगन और विज्ञापन सड़कों-मेट्रो आदि में लगाकर पैसा क्यों खर्च कर रही है? बदल डालिए इतिहास और रख डालो रावण और दुशासन, मोहम्मद बिन कासिम जैसे नीच पापियों को देवताओं की श्रेणी में? "जिस दरिन्दे को अपनी गिरफ्तारी से आजतक अपने किये का कोई पछतावा न हो जिसकी पैशाचिक सोच को 3 वर्षो के दौरान सुधारगृह बदलाव लाने में नाकाम रहा हो, जो इस न्यायिक सिस्टम का फायदा उठाना जान गया हो, उसे किस आधार पर आप लोग सम्मानित कर रहे हैं?

इस मामले में ब्रिटेन और अमेरिका जैसे देशों में भले ही 18 साल से कम उम्र के अपराधी को नाबालिग माना जाता हो लेकिन रेप और हत्या जैसे गंभीर अपराधो में उन्हें उम्रकैद तक की सजा का प्रावधान है। भारत में नाबालिगों के प्रति कानून काफी नरम है और यहाँ बलात्कार और हत्या जैसे गंभीर मामलों में भी ज्यादा से ज्यादा 3 साल की सजा हो सकती है। अब यदि कानून में बदलाव न किया गया और कल 17 साल 11 महीने का कोई आतंकवादी देश की अस्मिता पर हमला कर जाये तो क्या उसे भी इसी कानून के तहत माफ कर सम्मानित कर दिया जायेगा? इस पर चर्चा होना जरूरी है।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

21 दिसम्बर से 27 दिसम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24 दिसम्बर/ 25 दिसम्बर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 दिसम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बलिदान भवन, नया बांस में

स्वामी श्रद्धानन्द स्मृति यज्ञ

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जिस कक्ष में 23 दिसम्बर 1926 को बलिदान हुआ था, बलिदान भवन के उस कक्ष में स्वामी जी के 89वें बलिदान दिवस के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से 23 दिसम्बर 2015 को सायं 4 बजे स्मृति यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य यज्ञमान श्री राज कुमार आर्य थे। स्मृति यज्ञ में दिल्ली सभा मंत्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा, आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री एसपी सिंह, आर्य समाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा के मंत्री श्री आदर्श कुमार, श्री रवि कुमार के साथ-साथ अनेक आर्यजनों एवं आर्य माताओं ने पहुंचकर अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित की। **-संयोजक**

प्रतिष्ठा में,

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2016 के अवसर पर प्रगति मैदान में होगा

वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार यज्ञ

उद्घाटन : 9 जनवरी- प्रात: 11 बजे | समापन: 17 जनवरी- रात्रि 8 बजे

हिन्दी साहित्य स्टाल हॉल नम्बर 12 ए, स्टाल नम्बर 308-317

अंग्रेजी साहित्य स्टाल हॉल नम्बर 6, स्टाल नम्बर 108

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में आर्य समाज के साहित्य प्रचार स्टालों पर पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साह वर्धन करें

-सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक, मो. 9540012175, 9350502175

शोक समाचार

माता श्रीमती पुष्पा वर्मा का निधन

आर्य समाज फजिलका के संरक्षक डॉ. सुशील वर्मा जी की धर्मपत्नी एवं सुबोध वर्मा भा.ज.पा. मण्डल महासचिव की पूज्य माता श्रीमती पुष्पा वर्मा 6 दिसम्बर 2015 को दिवंगत हो गई। वह काफी समय से अस्वस्थ चल रही थी। उनका अंतिम संस्कार 7 दिसम्बर 2015 को शमशान भूमि में पूर्ण वैदिक रीति से मंत्रोच्चारण के साथ किया गया। वे अपने पीछे पुत्र-पुत्रवधु, पुत्रियां, पौत्र तथा दौहित्र-दौहित्रियों से भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्री ज्ञान प्रकाश आर्य का हृदयघात से निधन

वरिष्ठ पत्रकार एवं आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता मंडी आर्य समाज के संस्थापक आर्य समाज मन्दिर सीहोर के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ज्ञान प्रकाश आर्य का 72 वर्ष की आयु में हृदयघात के कारण निधन हो गया। अदम्य साहस, अनथक परिश्रम और दृढ इच्छाशक्ति के धनी श्री ज्ञान प्रकाश जी को लोग सम्मान में ज्ञान मामा के नाम से अधिक जानते थे। आप दैनिक देशबन्धु के जिला प्रतिनिधि रहे और आपने दैनिक सीवन की लहरे का सम्पादन भी बखूबी किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह